ॐ

भूमिका ।

अथर्वणवेदके मन्त्रों से अर्थात् परिमित अक्षरवाले जो वेदके वाक्यहैं उनको मन्त्र कहते हैं तिनकरके बोधित जो अर्थ है तिनका विस्तार करके ऽ[अर्थात् अथर्वण वेद में 'ब्रह्मा देवानामित्यादि' <ब्रह्मादेवताओंकोइत्यादि>मन्त्रोंसेही आत्मतत्त्वका निर्णय किया होने से। और तिसही अथर्वण वेद बिषे इस उपनिषद्रूप ब्राह्मण-भाग से पुनः तिसही आत्मतत्त्वका कथन है सो पुनरुक्ति दोषहै। यह आशंका चित्त बिषे होती है सो नहीं क्योंकि मन्त्रों करके संक्षेपमात्र कथन किया जो आत्मतत्त्व तिसही का यहां इस ब्राह्मण-भाग करके सविस्तर प्राणकी उपासना आदिक साधनोंसहित होनेसे कथन है एतदर्थ पुनरुक्ति दोषहै नहीं । इसप्रकार कहते हुये आचार्य इस ब्राह्मणभागको प्रकटकरते हैं॥ यहां यह विशेषहै कि मंत्ररूप जो विद्या है सो 'पराचैवापराच' इस प्रमाणसे पर अपर भेदसे दोप्रकारकी है। तिन में शिक्षाआदि छः अंगोसहित जो ऋग्वेदादि नामों करके विख्यात विद्या सो कर्म्मरूप और उपा-सनारूप होने से अविद्याहै तिन बिषे जो दूसरी उपासनारूपहै सो द्वितीय और तृतीय इन दोनों प्रश्नों करके प्रतिपादन कीजायगी और प्रथमा जो कर्मरूपा है सो कर्मकांड बिषे वर्णन कियाहै एतदर्थ यहां उसका वर्णन नहीं करते। और कर्मरूप और उपासनारूप जो विद्या है तिनके फल अनित्यादि दोष करके युक्तहैं ताते मुमुक्षु को तिनसे वैराग्यार्थ प्रथम प्रश्न बिषे स्पष्ट करते हैं। और प्रथम कही जे पर अपर दोविद्या तिन बिषे दूसरी जो परविद्या है सो उसको कहते हैं 'अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते' < अब जिससे सो अक्षर

UNIVERSITÄTS-BIBLIOTHEK HEIDELBERG
http://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/atharvavediyaprasnopanisad1921/0006
gefördert durch die DFG